आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 09 मई 2024, अंक – 57

विशेष संपादकीय

महिलाओं की राजनीति में बढ़ती भागीदारी आज भी सवालों के घेरे में

– *दिनेश के सिंह*

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे आ चुके हैं और इसी के साथ संसद में बैठने वाले 543 सांसदों की तस्वीर भी साफ हो गई है। इन चुनावों में भारत की आधी आबादी यानी महिलाओं की उम्मीदवारी भी अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी थी। ये पहला ऐसा मौका था, जब सबसे ज्यादा 797 महिला प्रत्याशी मैदान पर थीं। हालांकि सिर्फ 75 महिलाएं ही चुनाव जीत सकीं, जो पिछले 2019 लोकसभा चुनाव से तीन कम हैं। तब 78 महिलाएं संसद पहुंची थीं। चुनाव के नतीज़ों पर गौर करें तो, इस बार देश के 8 राज्यों- केरल, अरुणाचल प्रदेश, गोवा, मणिपुर, मेघालय, नगालैंड, मिजोरम और सिक्किम से एक भी महिला प्रत्याशी चुनाव नहीं जीत सकी है। वहीं, पश्चिम बंगाल में सबसे अधिक 10 सीटों पर महिला उम्मीदवारों को जीत मिली है।

इस बार राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक पार्टियों की बात करें, तो 2024 के लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 16 प्रतिशत महिला उम्मीदवारों को टिकट दिया था, वहीं कांग्रेस की ओर से 13 प्रतिशत उम्मीदवार महिलाएं थीं। आम आदमी पार्टी ने किसी भी महिला उम्मीदवार को मैदान में नहीं उतारा था। नतीज़ों में भाजपा की 69 महिला उम्मीदवारों में से 31 ने जीत हासिल की। वहीं कांग्रेस की 41 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं, जिनमें से 13 को जीत मिली। वहीं अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस की 12 महिला उम्मीदवारों में से 10 ने जीत हासिल की। समाजवादी पार्टी की ओर से 5 महिलाएं इस बार संसाद चुनी गई हैं।

आरक्षित सीटों की बात करें, तो इस बार कुल 131 आरक्षित सीटों में से 18 पर महिला उम्मीदवार चुनी गई हैं। इसमें अनुसूचित जाति (एससी) समुदायों के लिए आरक्षित 84 सीटों में से 13 प्रतिशत सीटों पर महिलाओं ने जीत हासिल की, जबकि 47 अनुसूचित जनजाति (एसटी) आरक्षित सीटों में से 15 प्रतिशत सीटें महिला उम्मीदवारों के खाते में गईं।

बहरहाल आपको याद होगा कि मोदी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के आखिरी समय में संसद में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था। जिसके अंतर्गत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 फीसदी सीटों पर आरक्षण का प्रावधान है। हालांकि ये कब से लागू होगा इसकी अभी कोई ठोस जानकारी नहीं है। ये हमारे समाज की विडंबना ही है कि आधी आबादी को राजनीतिक पार्टियां चुनाव में उम्मीदवार बनाने से कतराती हैं। कई जगह दिग्गजों के खिलाफ सिर्फ नाम के लिए उन्हें खड़ा कर दिया जाता है। पार्टियां महिलाओं को लेकर तमाम वादे तो करती हैं, लेकिन जब अमल की बात आती है, तो इससे कोसों दूर नज़र आती हैं। इतिहास देखें, तो 1962 के लोकसभा चुनाव में महिलाओं के जीत का प्रतिशत भी उत्साहित करने वाला था, तब सिर्फ 74 महिलाएं चुनाव लड़ी थीं, जिनमें से 48.64 प्रतिशत को जीत मिली थी। पिछले चुनाव 2019 में कुल पुरुष उम्मीदवार 7,334 थे तो महिला उम्मीदवारों की संख्या 715 थी। लोकसभा चुनाव 78 महिलाओं ने जीता था, जो करीब 15 प्रतिशत संख्या थीं। वहीं इस बार 797 महिला उम्मीदवार मैदान में थीं, लेकिन जीत प्रतिशत 9.41 रह गया है यानी 10 में से एक महिला उम्मीदवार चुनाव जीत रही है। इससे साफ है कि महिलाओं की राजनीति में बढ़ती भागीदारी आज भी सवालों के घेरे में ही है।

मोदी 3.0 : आसान नहीं है डगर संसद की

▪ हीरेंद्र झा

एक बार फिर से नरेंद्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। 2014 और 2019 के मुकाबले इस बार भाजपा बहुमत का आंकड़ा अकेले अपने दम पर नहीं छू सकी है लेकिन एनडीए गठबंधन ने यह जादुई आंकड़ा मिलकर पूरा कर लिया है। एक्सपर्ट इस चुनाव परिणाम का अलग-अलग तरीके से विश्लेषण कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले कार्यकाल की शुरुआत में जब भाजपा और एनडीए के नेता चुने गए थे तो उन्होंने संसद के केंद्रीय कक्ष में प्रवेश करने से पहले उसकी सीढ़ियों को चूमा था। इस बार उन्होंने भारतीय संविधान को नमन किया है। लोकसभा चुनाव में विपक्ष ने संविधान में बदलाव को मुद्दा बनाया था। विपक्षी दल कांग्रेस के पास 99 लोकसभा सदस्य हैं। प्रधानमंत्री के नेता चुने जाने और शपथ ग्रहण के पहले ही कांग्रेस के नेता राहुल गांधी शेयर बाजार में घोटाला और इस पर जेपीसी की जांच की मांग कर दी है। मीडिया विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने संसद भवन में महात्मा गांधी समेत अन्य महापुरुषों की मूर्ति विस्थापन का मुद्दा उठाया है। आशय यह कि विपक्ष आक्रामक, ऊर्जा से लबरेज, सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाने का संदेश दे रहा है। राहुल गांधी भी कह रहे हैं कि अब उनके दल के पास ताकत आ गई है। प्रधानमंत्री को अगले कार्यकाल में इस चुनौती से निबटना होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहली बार सहयोगी दलों के सहयोग से चलने वाली सरकार चलाएंगे।

भाजपा के पास संसद में सरकार चलाने के लिए जरूरी संख्याबल नहीं है। निर्भरता सहयोगी दलों पर रहेगी। भाजपा के पास बहुमत के आंकड़े से 32 सांसद कम हैं। टीडीपी और जद(यू) केवल दो दलों के सांसदों को मिलाकर लोकसभा में 28 होंगे। इसलिए दोनों दलों को एनडीए में वजन रहेगा और प्रधानमंत्री को हमेशा ध्यान में रखना होगा कि सहयोगी दल के बिना नहीं चल सकते। तीसरा दल लोक जनशक्ति पार्टी(राम विलास पासवान) है। उसके पांच सदस्य हैं। इन दलों के नेताओं, मंत्रिमंडल में इनके सदस्यों को भी अहमियत देनी होगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल में गृह, वित्त, रक्षा, विदेश चार प्रमुख मंत्रालय हैं। सहयोगी दल इसमें से किसी विभाग की मांग कर सकते हैं। इसके अलावा कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास, रेल, शिक्षा, स्वास्थ्य, वाणिज्य, ऊर्जा, सडक़ एवं परिवहन, दूर संचार, नागरिक उड्डयन जैसे महत्वपूर्ण मलाईदार विभागों के लिए सहयोगी दल दबाव बना सकते हैं। प्रधानमंत्री के सामने इसकी चुनौती खड़ी भी है। प्रधानमंत्री ने अपने दो कार्यकाल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की मंशा के अनुरुप हिन्दुत्व के मुद्दे को धार दी है। उन्होंने अगले 100 दिन के सरकार के कामकाज का एजेंडा तैयार कर लिया है, लेकिन इसे बदलना पड़ सकता है। अल्पसंख्यकों के मुद्दे पर प्रधानमंत्री की पिच कमजोर रही है। तीसरे कार्यकाल में इसकी चुनौती काफी बड़ी है। टीडीपी के नेता चंद्र बाबू नायडू और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए यह विषय महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री को संभलकर चलना पड़ सकता है। गठबंधन की सरकार चलानी पड़ सकती है। कॉमन सिविल कोड, एनआरसी समेत तमाम मुद्दों पर आम सहमति का सामना करना पड़ सकता है। प्रधानमंत्री को किसान कल्याण और कृषि, ग्रामीण विकास, रोजगार पर विशेष ध्यान देना होगा। उ.प्र., महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, बिहार में राजनीतिक-सामाजिक समीकरण की भी चुनौती बढ़ी है। कुछ ही महीने बाद दिल्ली, महाराष्ट्र, झारखंड समेत राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं। प्रधानमंत्री को इसे भी साधना है। भारतीय सेना में अग्निवीर भर्ती योजना को प्रधानमंत्री ने परिवर्तनकारी बताया था, लेकिन इसको लेकर भारी विरोध हो रहा है। सहयोगी दल भी इसकी समीक्षा का दबाव बना रहे हैं। ऐसे में सरकार पर अपने सहयोगियों के दबाव के अलावा भारत की अर्थ व्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने के साथ-साथ तमाम अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों का भी दबाव रहेगा।

इंटरव्यू

मुझे जो जिम्मेदारी दी जाएगी, मैं स्वीकार करूंगी: हेमा मालिनी

दिग्गज अभिनेत्री हेमा मालिनी लगातार तीसरी बार मथुरा से जीतकर सांसद बनी हैं। हेमा इस जीत से काफी उत्साहित हैं। उन्होंने जीतने के बाद पहली बार आधी आबादी संडे से बातचीत की है जो आप यहाँ पढ़ सकते हैं।

सवाल: 400 पार तो नहीं हुआ, आपकी पार्टी 240 पर ही सिमट गई। क्या कहेंगी आप?

हेमा: हम सब इस परिणाम से हैरान हैं। आखिर ऐसा कैसे हो सकता है? नरेंद्र मोदी जैसा प्रधानमंत्री इस देश में दूसरा कोई नहीं हुआ। पर जीत हार होती रहती है। विपक्ष ऐसा बर्ताव कर रही है जैसे कि वो ही जीत रही है। उनको अब मालूम चल गया होगा कि हम सरकार बना रहे हैं और यह सरकार भी मोदी जी के नेतृत्व में शानदार तरीके से काम करेगी।

सवाल: क्या इस बार आप मंत्री भी बनेगी?

हेमा: यह सब मेरे हाथ में नहीं है। भगवान की इच्छा हुई तो बन जाऊँगी। अगर मुझे मंत्री पद दिया जाएगा तो मुझे स्वीकार है। मुझे जो भी जिम्मेदारी दी जाएगी, मुझे स्वीकार है।

सवाल: एक सांसद के नाते अगले 100 दिनों में आप किन-किन कामों पर फोकस रखेंगी?

हेमा: 84 कोस परिक्रमा जो रुकी हुई है उससे स्टार्ट कराना है। गडकरी जी ने तो कहा हुआ है कि वो करेंगे। ये काम अगर हो गया तो इसके आस-पास जीतने भी गाँव हैं वो और विकसित बनेंगे। सड़क जैसी कई बुनियादी चीजें हो जाएंगी। मुझे गाँव-गाँव में जाकर कुछ करने की जरूरत नहीं होगी, इसके साथ ही सारा काम हो जाएगा। लोगों की आमदनी भी बढ़ेगी। इसके अलावा ट्रैफिक जाम को रोकने के लिए मथुरा में रिंग रोड की भी योजना है। एक डिग्री कॉलेज भी बनाना है।

सवाल: उम्र के इस पड़ाव पर भी आपका एक अलग चार्म है, इतनी ऊर्जा कहाँ से लाती हैं?

हेमा: मुझे यकीन नहीं होता कि मैं 75 साल की हो गई हूँ। ऐसा कभी लगता ही नहीं। सब कहते हैं कि अब 75 की हो रही हो। मैं लगातार काम में व्यस्त हूं। मुझे नहीं लगता कि मैं बुजुर्ग हो गई हूं। मैं डांस परफॉर्मेंस करती हूं तो उसके लिए नियमित रुप से डांस प्रैक्टिस करती हूं। उसके अलावा मेरे क्षेत्र (निर्वाचन क्षेत्र मथुरा) की जिम्मेदारियां हैं। हर समय दिमाग में यही रहता है कि फलां काम करना है। यह चीजें मुझे लगता है कि मुझे फिट रखती हैं। मेरे पास कुछ भी फालतू चीजें सोचने के लिए समय नहीं है।

सवाल: सिनेमा की चुनौतियां और राजनीति की चुनौतियां कितनी अलग लगती हैं?

हेमा: फिल्मों का क्षेत्र अलग होता है। यह ज्यादातर एंटरटेनिंग होता है। राजनीति में बहुत सतर्क रहना पड़ता है। पता नहीं कौन क्या करेगा कुछ समझ नहीं आता। मैं बहुत ज्यादा किसी चीज में दखल नहीं देती हूं। आपने देखा होगा कि ज्यादा अपना बयान नहीं देती। मैं आर्टिस्ट हूं, लेकिन ब्रज की सेवा कर रही हूं। अभी बतौर सांसद दो कार्यकाल हो गए हैं। अब यह तीसरा मौका मिला है तो मैं आगे भी जनता की सेवा करती रहूंगी।

हलचल

बंगाल में चला ममता का जादू, भाजपा बेहाल

देशभर में 542 लोकसभा सीटों पर चुनाव हुए जिसका रिजल्ट 4 जून को जारी किया गया। इस चुनाव में NDA ने सबसे ज्यादा सीटें जीती हैं, हालांकि कांग्रेस ने भी इस चुनाव में काफी अच्छा प्रदर्शन दिया है। लोकसभा चुनाव में NDA ने 292 सीटें और कांग्रेस ने 234 सीटें जीती है, इसके अलावा अन्य पार्टियों ने 17 सीटें जीती है। ममता बनर्जी के गढ़ पश्चिम बंगाल की बात करें तो ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने बेहद ही बढ़िया प्रदर्शन किया है। पश्चिम बंगाल में 42 लोकसभा सीटों पर चुनाव हुआ। इन 42 सीटों में से 29 सीटों पर टीएमसी ने अपना परचम लहराया है तो वहीं इस चुनाव में बीजेपी ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी थी, बीजेपी ने भी बंगाल में 12 सीटों पर अपनी जीत दर्ज की है, जो कि पिछली बार की तुलना में 10 सीटें कम हैं। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस ने भी इस बार मात्र एक सीट अपने नाम किया है। अपनी जीत से ममता बेहद खुश नजर आईं और जीत के बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश में शानदार प्रदर्शन के लिए अखिलेश यादव की भी जमकर सराहना की।

अयोध्या में नहीं खिला भाजपा का कमल, स्वरा भास्कर ने कसा तंज, बोलीं- जय सिया राम...

देश में आम चुनावों के नतीजे सामने आ गए हैं। भारतीय जनता पार्टी के हिसाब से लोकसभा चुनाव 2024 कुछ खट्टा और कुछ मीठा रहा है। बीजेपी ने इस चुनाव में कई हाई-प्रोफाइल सीट को गंवाया है जिनमें राम नगरी अयोध्या को लेकर अभी भी पार्टी सदमे में है। इस बीच विपक्ष इस सीट को लेकर अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया दे रही है। ऐसे में बॉलीवुड अभिनेत्री स्वरा भास्कर भी अयोध्या में भाजपा की हार पर तंज कसती नजर आईं। अदाकारा ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर स्टोरी में एक पोस्ट शेयर किया है, जिसमें अयोध्या में भाजपा की हार का जिक्र का किया गया है। इस स्टोरी पर स्वरा ने जय सिया राम का स्लोगन लिखा है। दूसरी पोस्ट में एक्ट्रेस ने हम हम साथ साथ हैं फिल्म के गाने की लाइन 'ये तो सच है कि भगवान है' को लिखा है। इस तरह से स्वरा भास्कर ने बीजेपी की हार पर मजाकिया पोस्ट साझा किए हैं।

लोकसभा चुनाव में मायावती की शर्मनाक हार

कभी यूपी में कभी अपने दम पर सरकार बनाने वाली बहुजन समाज पार्टी की इस बार लोकसभा चुनाव में बड़ी दुर्गति हुई है। खाता खुलना तो दूर एक भी ऐसा प्रत्याशी नहीं रहा जो दूसरे नंबर पर रहा हो। यूपी के हर सीट पर बसपा या तो तीसरे नंबर पर है या चौथे पायदान पर खिसक गई है। कुछ सीटें तो ऐसी हैं ,जहां बसपा प्रत्याशियों को जमानत बचाना मुश्किल हो गया। इस चुनाव में बसपा सुप्रीमो मायावती की सबसे बड़ी हार उत्तर प्रदेश में देखी गई। ऐसी स्थिति में बांदा के युवा प्रत्याशी मयंक द्विवेदी ने पार्टी को सम्मानजनक मत दिलाकर बसपा के लिए अधिक वोट दिलाने का कीर्तिमान बनाया है। इससे यूपी में बसपा की लाज बच गई। बुंदेलखंड में कभी बसपा का दबदबा रहा है। इस क्षेत्र में कभी लोकसभा की लगभग सभी सीटों पर जीत दर्ज करने वाली बहुजन समाज पार्टी इस बार कोई करिश्मा नहीं कर सकी।

दिल्ली में इस बार दो महिला सांसद

दिल्ली के 7 लोकसभा सीट जीतकर भाजपा उत्साहित है। इस बार दिल्ली में सात में से दो सीटें महिलाओं को मिली हैं। इस लोकसभा चुनाव में नई दिल्ली सीट से बांसुरी स्वराज को भारतीय जनता पार्टी ने केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी का टिकट काटकर मैदान में उतारा। उनका मुकाबला आम आदमी पार्टी के सोमनाथ भारती से था। सोमनाथ भारती दिल्ली के राजनीति के बड़े नाम हैं। बावजूद इसके, बांसुरी स्वराज नई दिल्ली सीट जीतने में सफल रहीं। हालांकि, उनके जीत का अंतर काफी बड़ा नहीं रहा। स्वराज को 4 लाख 53 हजार 185 वोट मिले जबकि भारती 3 लाख 74 हजार 815 मत लाने में सफल रहे। इस तरह बांसुरी ने 78 हजार 730 मतों के अंतर से चुनाव जीत लिया। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में इस सीट से मीनाक्षी लेखी की जीत हुई थी। बांसुरी स्वराज की एक पहचान बीजेपी की कद्दावर नेता और पूर्व विदेश मंत्री रहीं स्वर्गीय सुषमा स्वराज की बेटी के तौर पर है। सुषमा स्वराज दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री रही हैं। वहीं इस लोकसभा चुनाव में दिल्ली की 7 सीटों में से 2 पर महिला प्रत्याशियों की जीत हुई है। पश्चिमी दिल्ली से भाजपा की कमलजीत सहरावत जीती हैं जिन्होंने कड़े मुकाबले में दिग्गज नेता महाबल मिश्रा को हराया।

मोदी 3.0 में ये महिला संसद बँ सकती हैं मंत्री

नरेंद्र मोदी को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) का नेता चुन लिया गया है। मोदी 9 जून को प्रधानमंत्री पद की शपथ ले सकते हैं। इससे पहले एनडीए के सभी सहयोगी दलों के बीच कैबिनेट में किसको कितनी सीटें मिलेंगी, इस पर रस्साकशी जारी है। एनडीए में शामिल सभी पार्टियां अपने-अपने समीकरण साधने में लगी हैं। इस बीच मंत्री पद के संभावित चेहरों के नाम की चर्चा तेजी हो रही है। महिला मंत्री की बात करें तो पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी सोमनाथ का मात देकर सांसद चुनी गई हैं। चर्चा है कि नई दिल्ली से पहली बार सांसद चुनकर संसद पहुंचने वाली बांसुरी स्वराज को मोदी के नए मंत्रिमंडल में जगह मिल सकती है। मध्यप्रदेश की सागर लोकसभा सीट से कांग्रेस के चंद्रभूषण सिंह बुंदेला उर्फ गुड्डू राजा को 4.71 लाख से ज्यादा वोट से मात देने वाली डॉ. लता वानखेड़े के नाम पर भी सुगबुगाहट है। मध्यप्रदेश की धार लोकसभा सीट से दूसरी बार सांसद चुनी गई भाजपा नेता सावित्री ठाकुर के नाम पर भी चर्चा जारी है। इसके अलावा निर्मला सीतारमण और हेमामालिनी का नाम भी चर्चा में है।

मेनका गांधी और स्मृति ईरानी जैसी दिग्गज हारीं, लेकिन 74 महिलायें इस बार बनी सांसद

▪ आधी आबादी डेस्क

मेनका गांधी और स्मृति ईरानी की हुई हार तो कंगना रनौत जैसी नई सांसद सी बार जीती भी हैं। हेमा मालिनी जैसी भी कुछ सांसद हैं जिन्होंने अपनी जीत दोहराई भी है। बहरहाल, 18वीं लोकसभा के लिए लोकसभा चुनाव 2024 में देशभर में कुल 74 महिलाओं (13.62 प्रतिशत) ने जीत दर्ज की है। इनमें से लगभग 39 ने पहली बार संसदीय चुनाव जीता है। 2019 में पहली बार लोकसभा चुनाव जीतने वाली महिलाओं की संख्या 48 थी। जबकि 78 महिलाओं (14 प्रतिशत) ने लोकसभा चुनाव जीता था। इस बार सबसे अधिक 11 महिला सांसदों की संख्या पश्चिम बंगाल में है। इनमें से पांच पहली बार सांसद बनी हैं।

कहां-कितनी महिलाओं ने पहली बार लोकसभा चुनाव जीता

महाराष्ट्र से पांच, उत्तर प्रदेश से चार, गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान से तीन-तीन, बिहार, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, ओडिशा और दिल्ली से दो-दो, असम, हिमालच प्रदेश, त्रिपुरा और तेलंगाना से एक-एक महिला प्रत्याशी ने पहली बार लोकसभा चुनाव जीता है। 2019 में पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक 11-11 महिलाओं ने लोकसभा चुनाव जीता था।

भाजपा की 30 महिला नेता बनीं सांसद

लोकसभा चुनाव 2024 में कुल 797 महिलाओं ने अपनी किस्मत आजमाई। सबसे अधिक 69 महिलाओं को भाजपा ने टिकट दिया था। वहीं कांग्रेस ने 41 महिलाओं को उतारा था। सबसे अधिक भाजपा की 30 महिला प्रत्याशियों ने जीत दर्ज की है। दूसरे नंबर पर कांग्रेस रही। कांग्रेस की 14 महिला नेताओं ने लोकसभा चुनाव जीता है। टीएमसी की 11 और सपा की चार और द्रमुक की तीन महिला नेता सांसद पहुंची हैं। लोजपा (राम विलास) और जदयू की दो-दो महिला प्रत्याशियों ने चुनावी मैदान फतेह किया है।

2019 का समीकरण

2019 लोकसभा चुनाव में कुल 726 महिला प्रत्याशियों ने चुनाव लड़ा था। इनमें से 78 ने जीत दर्ज की थी। यह कुल महिला प्रत्याशियों का सिर्फ 10.74 फीसदी था। 2019 में 276 सांसद पहली बार चुनाव जीते थे। अबकी पहली बार लोकसभा चुनाव जीतने वाले सदस्यों की संख्या 280 है।

आंकड़ों में भारत पीछे

विश्लेषण के अनुसार, महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत अभी भी कई देशों से पीछे हैं। ये चिंता का विषय है। उदाहरण के तौर पर दक्षिण अफ्रीका में 46 प्रतिशत, ब्रिटेन में 35 प्रतिशत और अमेरिका में 29 प्रतिशत सांसद महिलाएं हैं।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹69,930	₹96,000
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

कंगना रनौत के थप्पड़ की गूंज, दो हिस्सों में बँटा देश!

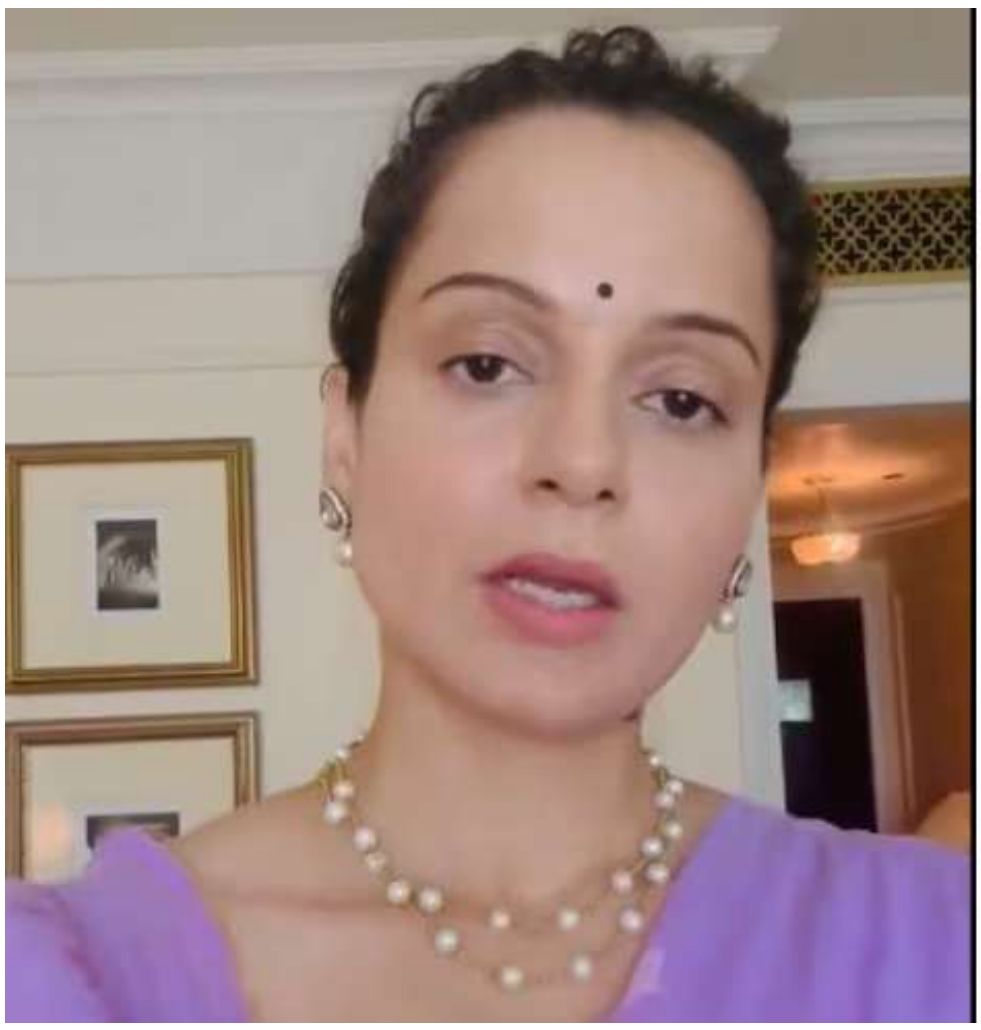

▪ आधी आबादी डेस्क

सोशल मीडिया पर बहुत लोग इस बात से खुश हैं कि कंगना को थप्पड़ मारा गया। कुछ इसकी आलोचना कर रहे हैं। जो खुश हैं उनकी सोच बताती है कि वो भाजपा और कंगना से किस हद तक नफरत करते हैं कि इस तरह की बातों में भी वो मज़ा ले रहे हैं। गौरतलब है कि बालीवुड अभिनेत्री और मंडी से भाजपा सांसद कंगना रनौत को चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर सीआईएसएफ की महिला जवान ने थप्पड़ मारा है। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। कंगना रनौत को थप्पड़ मारने के बाद महिला जवान वहां से निकल जाती है। हालांकि इस दौरान एयरपोर्ट पर अफरा-तफरा मच गई। इस बीच अब एक्शन लेते हुए सीआईएसएफ की महिला जवान को सस्पेंड कर दिया गया है।

बता दें कि कंगना रनौत ने इस बाबत एक बयान भी जारी किया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्रोफाइल पर बयान साझा करते हुए कहा, मुझे बहुत सारे फोन कॉल्स आ रहे हैं। मेरे शुभ चिंतकों और मीडिया के। मैं सुरक्षित हूं। चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर जो हादसा हुआ वह सिक्योरिटी चेक के साथ हुआ। वहां सिक्योरिटी चेक कर जब मैं निकली तो दूसरे कमरे में सीआईएसएफ की जो सुरक्षाकर्मी थीं, उन्हें पास करने का प्रयास किया तो उन्होंने सामने से आकर मेरे चेहरे पर मारा। इसके बाद वो गालियां देने लगीं। जब उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया तो उन्होंने कहा कि वो किसान आंदोलन को सपोर्ट करती हैं। मैं सुरक्षित हूं, लेकिन मेरी चिंता ये है कि जो आतंकवाद और उग्रवाद पंजाब में बढ़ रहा है, उसे हम कैसे हैंडल करेंगे।"

कंगना की शिकायत के बाद लिया गया एक्शन

सीआईएसएफ की महिला जवान ने कंगना को थप्पड़ मारने के बाद कहा कि इसने (कंगना रनौत) बयान दिया था कि 100-100 रुपये में लोग किसान आंदोलन में बैठे हैं। मेरी मां किसान आंदोलन में बैठी थी। ये क्या वहां बैठेगी? बता दें कि यह पूरी घटना गुरुवार दोपहर 3.30 बजे की है, जब कंगना रनौत चंडीगढ़ एयरपोर्ट से दिल्ली के लिए रवाना हुई थीं। इसी दौरान उनके साथ यह घटना घटी। इसके बाद कंगना रनौत ने इस मामले की शिकायत पुलिस में जिसके बाद अब एक्शन लेते हुए महिला जवान कुलविंदर कौर को सस्पेंड कर दिया गया है।

इस घटना पर मजे लेते लोग

इस घटना के बाद जहां मीका सिंह और रवीना टंडन जैसे सितारे कंगना के सपोर्ट में उतरे, तो वहीं कंपोजर और सिंगर विशाल ददलानी ने एक ऐसा ट्वीट किया, जिस पर विवाद हो गया। विशाल ददलानी ने अपनी इंस्टा स्टोरी पर एक पोस्ट शेयर किया, जिसमें उन्होंने लिखा, "अगर मिस कौर को उनकी ड्यूटी से निकाल दिया गया है, तो कोई मेरे से उनका संपर्क करवा दो और मैं इस बात को सुनिश्चित करूंगा की उन्हें नौकरी मिल जाए। विशाल ही नहीं ऐसे कई लोग हैं जो खुलकर कंगना को थप्पड़ मारने पर खुशी जता रहे हैं। हालांकि कई लोगों ने इस बात की कड़ी निंदा भी की है।

स्त्री, रुही, भेड़िया के बाद अब 'मुंज्या'

▪ स्मिता श्रीवास्तव

हॉरर फिल्मों के साथ इन दिनों कॉमेडी का तड़का भी डाला जा रहा है, ताकि डर के साथ बीच में हल्के-फुल्के पलों से संतुलन साधा जा सके। निर्माता दिनेश विजन हॉलीवुड की तर्ज पर अपनी हॉरर कॉमेडी फिल्मों का यूनिवर्स बनाने की तैयारी में हैं। स्त्री, रूही, भेड़िया के बाद इस कड़ी में 'मुंजा' चौथी फिल्म है। इस बार उन्होंने महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र की लोककथा को आधार बनाया है। हालांकि, फिल्म ना बहुत डरा पाती है, ना ही हंसा पाती है।

मुन्नी की तलाश में लौटा मुंजा

पुणे में रह रहा बिट्टू (अभय वर्मा) डरपोक स्वभाव का है। वह ब्यूटी पार्लर चलाने वाली अपनी मां पम्मी (मोना सिंह) और आजी यानी दादी (सुहास जोशी) के साथ रहता है। वह विदेश में पढ़ाई करने जाना चाहता है, लेकिन उसकी मां चाहती है कि वह उसका बिजनेस संभाले। फिर गांव में अपने चाचा की बेटी की सगाई के लिए बिट्टू अपनी मां और दादी के साथ गांव जाता है। गाँव की जमीन को बेचने को लेकर उसकी दादी और चाचा के बीच बहस होती है। चेटूकवाड़ी के नाम से कुख्यात इस जगह को श्रापित माना जाता है। मान्यता है कि अगर किसी ब्राह्मण लड़के की मुंडन होने के 10 दिनों के भीतर ही मौत हो जाए तो वह ब्रह्मराक्षस यानी मुंजा बन जाता है। वह सिर्फ अपने खून के रिश्तेदारों को दिखता है। उस दौरान बिट्टू को अपने पिता की मौत के बारे में पता चलता है। वह चेटूकवाड़ी पहुंच जाता है। वहां पर मुंजा के बंधन खुल जाते है। दादी उसे बचाने जाती है। मुंजा उसकी जान ले लेता है। अपनी दादी की मौत से दुखी बिट्टू अपनी मां के साथ अपने घर लौटता है। तब उसे पता चलता है, मुंजा उसके साथ है। वह सूर्यास्त के बाद आता है और सूर्योदय के समय गायब हो जाता है। वहां से उसकी ताकतों का अंदाजा होता है। वह मुन्नी नामक लड़की को ढूढ़ने को लेकर बिट्टू को प्रताड़ित करता है। वह उससे शादी करना चाहता है। बिट्टू अपने दोस्त स्पीलबर्ग (तरनजोत सिंह) की मदद से मुन्नी को खोजता है। मुन्नी की खोज के बाद मुंजा का दिल बिट्टू की बचपन की दोस्त बेला (शरवरी) पर आता है। वह बेला के साथ शादी की जिद करता है। इस दौरान बिट्टू मुंजा से छुटाकारा पाने को लेकर आधुनिक तांत्रिक पडरी (एस सत्यराज) के पास मदद के लिए जाता है। वे बेला को झूठ बोलकर गांव लाते हैं। यहां पर शादी होती है या वे उससे छुटकारा पा पाएंगे? कहानी इस संबंध में हैं।

कहां लड़खड़ाई कहानी?

योगेश चंद्रेकर द्वारा लिखित कहानी में ताजगी है। फिल्म मध्यांतर से पहले तेजी से आगे बढ़ती है। इस दौरान बिट्टू के साथ-साथ बेला की जिंदगी से परिचित होते हैं। बेला का अंग्रेज ब्वॉयफ्रेंड है। वह उसके साथ अपने रिश्ते को आगे बढ़ाने को लेकर बहुत कंफ्यूज है। फिर मुंजा के आने के बाद बिट्टू का जीना हराम हो जाता है। यहां तक फिल्म में रोचकता बनी रहती है। मध्यांतर के बाद कहानी लड़खड़ाती है। किरदार बिखरे हुए नजर आते हैं। मुंजा के एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करने के प्रसंग में कोई रोमांच नहीं है। फिल्म में हॉरर को पैदा करने के लिए साउंड इफेक्ट्स का प्रयोग हुआ है। वह बहुत प्रभावी नहीं बन पाया है। चेटूकवाड़ी को जितना डरावना संवादों में बताया है, वहां जाने पर वह डर कहीं महसूस नहीं होता। चार मुंजा से छुटकारा दिलाने का दावा करने वाले पडरी का किरदार अधपका है। पहले वह मुंजा को वश में करने के लिए गोल लक्ष्मण रेखा खींच लेते हैं, लेकिन बाद में असहाय नजर आते हैं। कम्प्यूटर जेनरेटेड इमेज (सीजीआइ) की मदद से बनाया गया मुंजा गांव में कोई आतंक क्यों नहीं मचाता? यह सवाल जेहन में आता है। शादी की तैयारी के समय मुंजा के साथ बिट्टू के भिड़ंत के दृश्य को रोचक बनाने की संभावना थी, उसमें लेखक और निर्देशक चूक गए हैं। बेला के ब्वॉयफ्रेंड का मुंजा बुरा हाल करता है। बाद में वह कहानी से गायब नजर आता है।

अभय वर्मा के कंधों पर फिल्म

कलाकारों में बिट्टू बने अभय वर्मा का काम सराहनीय है। फिल्म का भार भी उनके कंधों पर है। उन्होंने बिट्टू के डरपोक, शर्मीले और दिमाग से तेज पात्र को सहजता से जीवंत किया है। शरवरी खूबसूरत लगी हैं। उनके किरदार और मुंजा के बीच कुछ प्रसंग को डालकर कहानी को रोचक बनाने की संभावना थी। क्लाइमेक्स में उनका पात्र बहुत विश्वसनीय नहीं बन पाया है। उनका आइटम सॉन्ग आफरी दम आखिरी में प्रमोशनल सांग के तौर पर सामने आता है। सत्यराज अपनी भूमिका साथ न्याय करते हैं, लेकिन उनका पात्र लेखन स्तर पर कमजोर है। फिल्म के आखिर में इसे भेड़िया से जोड़ा गया है।

फिल्म : मुंज्या (Munjya)
रेटिंग : ** (2 स्टार)
कलाकार : शरवरी वाघ, अभय वर्मा, मोना सिंह, सुहास जोशी
निर्देशक : आदित्य सरपोतदार
निर्माता : दिनेश विजन

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353